इतिहास का ईंट-चूना

(प्रसाद की इतिहास पर एकाग्र कविताओं का पुन: पाठ)

माधव हाड़ा

प्रसाद अन्वेषी या 'शव साधक' कोटि के इतिहासकार नहीं थे, लेकिन उन्हें इतिहास का ज्ञान था और इसमें उनकी गहरी दिलचस्पी थी। वे मूलतः साहित्यकर्मी थे और पुनरुत्थान संबंधी सजगता के कारण उन्होंने उपने साहित्य में अपने इतिहास संबंधी ज्ञान का उपयोग किया। अपने समकालीनों में वे साहित्य में इतिहास के अधिक और निरंतर उपयोग के कारण गड़े मुर्दे उखाड़ने वाले के रूप में जाने गए। प्रसाद का इतिहास बोध अलग मसला है। उनका इतिहासबोध भी कमोबेश उनके समकालीन नवजागरणकालीन साहित्यिकों की तरह का ही है। वे भी आरम्भ में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की तरह ब्रिटिश शासन के प्रशंसक हैं। एडवर्ड सप्तम को वे 'नरपालक' संबोधित करते हैं। सम्राट पंचम से वे भारत उद्धार की प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि *भारत को भी सुखी बना दो रहे न आरत/तुम नहीं भूलो इसे, तुम्हे नहीं भूले भारत।* इसी तरह वे भी मुगल शासकों के विरूद्ध संघर्ष करनेवाले क्षेत्रीय सामंतों-राजाओं का राष्ट्रीय नायकों की तरह गुणगान करते हैं। यहां इस आलेख में केवल कविता में उनके इतिहास के उपयोग के ढंग को पहचानने-समझने का प्रयास किया गया है।

कोई कवि इतिहास का उपयोग रचना में इतिहास की तरह नहीं करता। प्रसाद भी इतिहास का उपयोग कविता में इतिहास की तरह नहीं करते। इतिहास उनकी कविता में केवल कहने भर के लिए ही इतिहास है, अन्यथा कोई नहीं जानता हो, तो यह केवल गल्प है। प्रसाद कविता में इतिहास को गल्प की तरह बरतते हैं। इतिहास का अपना अनुशासन और व्यवस्था है, लेकिन यह सब प्रसाद की चिंता और सरोकार में नहीं हैं। वे इतिहास के किसी प्रकरण, घटना, चरित्र आदि को संकेत, सहारे या आधार की तरह उठाते हैं और उसे अपनी कल्पना में ढाल कर नए अर्थ या भाव की दुनिया रच डालते हैं। विधायक और निर्णायक हर हालत में उनकी ऐतिहासिक कही जाने वाली कविताओं में इतिहास नहीं, उनकी कल्पना होती है। उनकी कल्पना इतिहास के ज्ञात घटना, चरित्र, काल और संबंध के क्रम और व्यवस्था में जब-तब हस्तक्षेप करती हे। यदि इसमें अपने लिए जगह और गुंजाइश नहीं निकले, तो निकाल लेती है और कभी जरूरत हो तो उसको बदल भी देती है।

प्रसाद की कविताओं में भारतीय इतिहास का काल विस्तार सबसे ज्यादा है- प्राक्, वैदिक और रामायण-महाभारत, सल्तनत-मुगलकाल से होते हुए वे अपने समय तक को अपनी कविताओं में समेटते हैं। प्रसाद का मन रमता प्राक्, वैदिक और रामायण-महाभारतकालीन इतिहास में है। यहां इतिहास केवल गाथा संकेतों में है, इसके संबंध में ज्ञात बहुत कम है, इसलिए प्रसाद की कल्पना की उड़ान यहां निर्बाध और स्वच्छंद है। सल्तनत-मुगल और उपनिवेशकाल से संबंधित कविताओं में भी प्रसाद की कल्पना विधयक-निर्णायक तो निरंतर है, लेकिन यहां इतिहास ज्ञात और प्रसिद्ध है इसलिए प्रसाद को यहां अपने कवि के लिए जगह निकालने असुविधा होती है। वे जगह निकालने के लिए इतिहास के ज्ञात और प्रसिद्ध तथ्यों से छेड़छाड़ करते हैं या यह जगह इतिहास संबंधी उनके अज्ञान से निकलती है। दोनों ही स्थितियों में इतिहास का ज्ञात और प्रसिद्ध से अलग होना उनकी कुछ कविताओं के आस्वाद की पूर्णता में व्यवधान पैदा करता है।

प्रसाद की कवि वृत्ति उस इतिहास में सहज है, जहां ज्ञात कम है और जिसके संबंध में साक्ष्य कम, केवल कुछ संकेत मिलते हैं। वेद, पुराण, उपनिषद् आदि की गाथाएं पूरी तरह इतिहास नहीं हैं, लेकिन इनमें इतिहास के संकेत कई हैं। प्राक्, वैदिक और रामायण-महाभारतकालीन इतिहास के उपलब्ध संकेतों को विस्तार देने में प्रसाद को सुविधा होती है। उनकी कल्पना इन संकेतों के सहारे अपनी मनचाही दुनिया रचती है। यहां ज्ञात और प्रसिद्ध संबंध, घटनाएं और कालक्रम उनकी कल्पना की लगाम नहीं पकड़ते। प्राक् ऐतिहासिक गाथा सेकेतों से बनी-बुनी *कामायनी* उनकी इस तरह की कविताओं में सर्वश्रेठ और महान् रचना है। *कामायनी* तक आने से पहले गाथा संकेतों को कल्पना के आधार पर मनचाहा विस्तार देने वाली-हाथ मांजने का काम करती- उनकी एकाधिक कविताएं मिलती हैं। ये कविताएं *कामायनी* की तुलना में बहुत कमजोर हैं और कुछ तो गाथा प्रकरणों का पुनराख्यान भर हैं, लेकिन इनमें प्रसाद की विधायक कल्पना का चमत्कार सब जगह है। *अयोध्या का उद्धार* उनकी ब्रज भाषा में लिखी आरंभिक कविताओं में से है, जिसमें वे कालिदास कृत *रघुवंश* के सोलहवें सर्ग के संकेतों को आधार बनाकर कुश द्वारा अयोध्या के उद्धार की कथा लिखते हैं। यों यह कविता पुनराख्यान भर है, लेकिन इसमें कथा प्रसिद्ध से अलग और नाटकीय है इसलिए प्रभावकारी है। *करुणालय* भी उनकी आरंभिक कविताओं में से ही है, जिसमें संकेत ब्रह्मर्षि की हरिश्चंद्र और अजीगर्थ की कथा का है, लेकिन कवि नरबलि को अपराध और ईश्वर का सबका परिपालक ठहराने के लिए इसका उपयोग करता है।

चित्रकूट उनकी इसी तरह की अपेक्षाकृत कसी हुई और प्रौढ़ रचना है, जिसमें राम-भरत मिलन का प्रसिद्ध प्रकरण है। प्रसाद की कल्पना उसको इस तरह नाटकीय बनाकर हमारे सामने लाती है कि राम का भरत पर सहज विश्वास और प्रेम घटना की उठापटक में मथकर ऊपर आ जाता है। *कामायनी* तक आते-आते प्रसाद ऐतिहासिक गाथा संकेतों को कल्पना से विस्तृत करने की कला में महारत हासिल कर लेते हैं। वे इसमें उपलब्ध ऐतिहासिक गाथा संकेतों को आधार पर मानवीय विकास की ऐसी कहानी रचते हैं जिसके एक साथ कई अर्थ खुलत-निकलते हैं। वे इसके आमुख में इन गाथा संकेतों का खुलासा भी करते हैं, लेकिन ये उनकी कल्पना की नयी दुनिया में इस तरह घुलमिल जाते हैं कि इनका होना न तो निर्णायक रहता है और न ही अलग से दिखता है।

सल्तनत-मुगल-राजपूत और उपनिवेशकाल पर आधारित प्रसाद की कविताओं में ज्ञात और प्रसिद्ध इतिहास कल्पना की उड़ान को अवरुद्ध करता है, इसलिए इनका प्रभाव एकरूप और सघन नहीं है। इनमें से कुछ कविताएं जैसे *पेशोला की प्रतिध्वनि* और *प्रलय की छाया* खूब चर्चित और प्रसिद्ध भी रही हैं और एकाधिक आलोचकों की निगाह में भी चढ़ी हैं। खास बात यह है कि ऐसी सभी कविताएं भारत के क्षेत्रीय इतिहासों से संबंधित हैं और आख्यानात्मक है। *पेशोला की प्रतिध्वनि* और *महाराणा का महत्त्व* राजस्थान के मेवाड़, जबकि *प्रलय की छाया* गुजरात-मेवाड़ और *शेरसिंह का शस्त्र समर्पण* पंजाब के इतिहास पर आधारित है। *पेशोला की प्रतिध्वनि* का स्वर अलग है। राज्स्थान के मेवाड़ के क्षेत्रीय नायक महाराणा प्रताप नवजागरणकालीन कई कवियों के आदर्श रहे हैं। *पेशोला की प्रतिध्वनि* में उनसे संबंधित कोई घटना नहीं है- यहां उनके संघर्ष और विगत वीरता का स्मरण दिलाकर स्वतंत्रता के लिए संघर्ष का आह्वान है। प्रसाद की दो कविताओं-*महाराणा का महत्त्व और प्रलय की छाया* में घटनाएं, चरित्र योजना और कालक्रम प्रसिद्ध और ज्ञात इतिहास से पूरी तरह मेल नहीं खाते। *महाराणा का महत्त्व* में प्रताप के जीवन से संबंधित एक घटना का काव्य रूपांतरण है। महाराणा प्रताप अपने पुत्र अमरसिंह को हरम सहित बंदी बनाई गई बेगम को सम्मान सहित उसके पति अब्दुर्रहीम खानखाना के पास भेजने का आदेश देते हैं। खानखाना इससे प्रभावित होकर अकबर से युद्ध रोक देने का अनुरोध करते हैं। अकबर भी महाराणा प्रताप के स्त्रियों के प्रति सम्मान भाव और वीरता से प्रभावित होता है और अपनी सेना वापस बुला लेने का आदेश देता है। यहां घटना का उत्तरार्द्ध इतिहाससम्मत नहीं है। सभी जानते हैं कि अकबर की सेना की मेवाड़ से वापसी खानखाना के आग्रह पर नहीं हुई थी।

प्रलय की छाया गुजरात-मेवाड के सल्तनतकालीन क्षेत्रीय इतिहास से संबंधित है। यहां इतिहास का केवल काव्य रूपान्तरण नहीं है। यहां इतिहास का आधार निर्णायक भी नहीं है। यहां ऐतिहासिक घटनाक्रम और चरित्र केवल माध्यम हैं और प्रसाद इनके माध्यम से स्त्री की आत्म प्रवंचना की भावनात्मक उथल-पुथल की नयी दुनिया रचते हैं। रानी कमला चितौड़ की जौहर करने वाली पद्मिनी को आदर्श मानकर अपने पति गुर्जरनरेश कर्णसिंह को अलाउद्दीन खिलजी के आधिपत्य से मुक्त होने के लिए प्रेरित करती है। आक्रमण के दौरान कर्णसिंह वीरतापूर्वक लड़ता हुआ दूर निकल जाता है और बन्दी बनाकर कमला अलाउद्दीन के पास ले जायी जाती है। कमला न तो पद्मिनी की तरह जौहर करती है और न ही कर्णसिंह के आग्रह पर मृत्यु का वरण करती है। वह अपने रूप के गर्व से अलाउद्दीन के गर्व का दमन करने के लिए उसकी रानी बन जाती है। यहां कालक्रम प्रसिद्ध और ज्ञात से अलग है। पद्मिनी ने जौहर गुजरात पर अलाउद्दीन के आक्रमण के बाद किया था, लेकिन प्रसाद उसे कमला का आदर्श बना देते हैं। अलाउद्दीन खिलजी की मानिक द्वारा हत्या भी इतिहाससम्मत नहीं है, लेकिन मानिक-काफुर-खसरू को अपनी तरफ से एक कर डालते हैं। *शेरसिंह का शस्त्र समर्पण* में भी घटना क्रम ज्ञात इतिहास के विरुद्ध है। इतिहास के अनुसार अंग्रेजों के विरुद्ध गुजरात की लड़ाई शेरसिंह की पराजय गुजरात में मानता है, जबकि प्रसाद उसे चिलियांवाला में शहीद करते हैं। इन कविताओं के घटना-कालक्रम और चरित्र योजना के इतिहास से मेल नहीं खाने के दो कारण हो सकते हैं। पहला तो यह कि प्रसाद ने रचनात्मक जरूरत के तहत ऐसा किया होगा। *महाराणा के महत्त्व* में वे प्रताप के स्त्री मात्र के प्रति सम्मान भाव और अकबर और उसके सामंतों पर इसके प्रभाव को दिखाना चाहते थे। *प्रलय की छाया* में कमला की आत्मप्रवंचना को गहरा और तीव्र करने के लिए किसी आदर्श की जरूरत थी, जो उन्हें चित्तौड़ की पद्मिनी में दिखाई पड़ता है। दूसरी संभावना यह है कि शायद प्रसाद को इतिहास को इसी रूप में ज्ञात था। प्रसाद की इतिहास में दिलचस्पी तो थी, लेकिन इतिहासकार जैसी अन्वेषण वृत्ति और गहराई उनमें नहीं थीं। उनका समय भारतीय इतिहास लेखन का आरंभिक समय भी था और क्षेत्रीय इतिहासों की जानकारियां तो उस समय बहुत सीमित मात्रा में ही उपलब्ध थीं। प्रसाद स्वयं इस संबंध में पूरी तरह आश्वस्त नहीं थे। कहते हैं कि उन्होंने अपनी ऐतिहासिक आधार लेकर लिखी कुछ रचनाओं को बाद में इतिहास के विरुद्ध पाकर निरस्त भी किया था। राजस्थान के क्षेत्रीय इतिहास का उपयोग अधिकांश नवजागरणकालीन साहित्यिकों ने किया, लेकिन इसके लिए वे उस समय उपलब्ध राजपूताना में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के पोलिटिक़ल एजेन्ट रहे लेफ्टिनेंट कर्नल जेम्स टॉड के इतिहास ग्रंथ

एंटिक्विटीज एंड एनल्स ऑफ राजपूताना पर निर्भर थे। यह रचना नवजागरण आंदोलन के दौरान बंगाल में बहुत लोकप्रिय हुई। टॉड ने इसकी रचना उपलब्ध सीमित तथ्यात्मक जानकारियों के साथ सुनी-सुनाई बातें मिला कर की थी, इसलिए यह इतिहास कम, कथात्मक आख्यान ज्यादा है। पूरी संभावना है कि प्रसाद ने अपनी ऐतिहासिक कविताओं में इस तरह की आरंभिक अपुष्ट ऐतिहासिक सामग्री और जनश्रुतियों का उपयोग किया हो और इनकी त्रुटियां उनकी कविताओं में भी आ गई हों। इसकी पुष्टि प्रसाद की कुछ प्रकरणों में केवल टॉड के इतिहास पर निर्भरता से होती है। मालदेव की विधवा राजकुमारी के हम्मीर से विवाह का वृत्तांत केवल टॉड के इतिहास में मिलता है, जिसका उपयोग प्रसाद ने अपनी कहानी *चित्तौड़ का उद्धार* में किया है। इसी तरह टॉड द्वारा अंग्रेजी में पिछौला के लिए प्रयुक्त 'पेशोला' का प्रयोग यथावत प्रसाद के यहां भी मिलता है।

इतिहास बहुत व्यापक और निरंतर है, इसलिए उसको जानने-समझने की सीमाएं हैं। कविता इतिहास के किसी क्षण पर ठहरकर उससे कुछ लेती है, लेकिन जो वह लेती है, इतिहास उससे अलग और आगे भी होता है। महान कविता अपने होने में इस 'अलग' और 'आगे' के लिए भी गुंजाइश रखती है। प्रसाद की कुछ कविताओं में यह गुंजाइश है और कुछ में नहीं है।

संपर्क : 607, मैट्रिक्स पार्क, धनश्री वाटिका के पास, न्यू नवरतन कांपलेक्स, भुवाना, उदयपुर 313 001, राजस्थान

मोबाइल + 91 94143 25302 E-mail: madhavhada@gmail.com